www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(An Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-1* *Issue-4* *November 2024***

दिव्यागों के प्रति समाज का दायित्व

डॉ0 चंद्रकांत बापूराव जोगदंड

विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, आर. वाय. पी. कला महाविद्यालय, विहामांडवा, ता. पैठण,जि. औरंगाबाद

वर्तमान समय में दिव्यांग एक पारिवारिक ही नहीं सामाजिक समस्या है। दिव्यांग एक प्रकार से प्राकृतिक अभिशाप है, परन्तु यदि दिव्यांग व्यक्ति की इच्छा शक्ति को सहयोग मिल जाये तो वह भी साधारण व्यक्ति की भाँति समस्त कार्यों को सम्पन्न कर सकता है। हिन्दी साहित्य में विमर्श का युग चल रहा है जैसे–स्त्री विमर्श, आदिवासी विमर्श, दलित विमर्श, किन्नर विमर्श, वृद्ध विमर्श, नाट्य–विमर्श, काव्य विमर्श तथा दिव्यांग विमर्श आदि विद्वत्जनों प्रतिपादित किया है कि विमर्श का कोई स्थायित्व नहीं होता है, बल्कि यह तत्कालीन होता है, आता है तथा चला जाता है। इतना अवश्य है कि यह सामाजिक दूरकता के लिए अपेक्षित नए संदर्भों में साहित्य का सार्थक मूल्यांकन विमर्श ला सकता है।

दिव्यांग विमर्श पर कुछ कहने के पूर्व हमें दिव्यांग शब्द का अर्थ जान लेना आवश्यक है। दिव्यांग शब्द का अर्थ है विकलांग व्यक्ति। दिव्यांग नाम भारतीय मूल का नाम है। दिव्यांग का अर्थ यह है कि ऐसा व्यक्ति जिसका शरीर का कोई अंग सामान्य व्यक्ति के शरीर की अपेक्षा कमजोर अथवा असक्षम है। दिव्यांग व्यक्ति सामान्य व्यक्ति की अपेक्षा सांसारिक अर्थात् जीविकोपार्जन का कार्य करने में पूरी तरह से सक्षम नहीं होता है। दिव्यांग के सन्दर्भ में एक अन्य शब्द प्रयोग किया जाता है वह शब्द है निःशक्त) जिस किसी व्यक्ति को चिकित्सा अधिकारी यह प्रमाणित कर दे कि जो व्यक्ति निःशक्तता से कम से कम 40 प्रतिशत ग्रस्त है वह विकलांग है।

विकलांग व्यक्ति, जिसे आमतौर पर विकलांगता वाला व्यक्ति कहा जाता है वह शारीरिक अथवा मानसिक विकलांगता से ग्रस्त होता है तथा वह जीवन गतिविधियों को पूर्ण रूप से सम्पन्न करने में असक्षम होता है। मनुष्य में दिव्यांगता किसी दुर्घटना अथवा किसी बीमारी अथवा किसी–किसी व्यक्ति में तो जन्म से ही हो सकती है। व्यक्ति के साथ किसी भी समय कोई अनहोनी घट सकती है, इस संदर्भ में कुछ भी नहीं कहा जा सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि–*''मनुष्य अपने जीवनकाल में कभी भी दिव्यांग हो सकता है।''*[1]

दिव्यांगता के संदर्भ निम्नलिखित विद्वानों के विचार इस प्रकार हैं–

स्कॉट हेमिल्टन

''लकारात्मक दृष्टिकोण ही जीवन की एक मात्र विकलांगता है।''[2]

वुल्फ कर्ट

''सामाजिक दृष्टिकोण के परम्परानुसार दिव्यांगों एवं वृद्धों का सम्मान करना चाहिए तथ सेवा करनी चाहिए क्योंकि यह प्रत्येक युवा जन का कर्तव्य है। इसका कारण यह है कि कोई भी व्यक्ति किसी भी समय दिव्यांग हो सकता है।''[3]

डॉ. सिक्कोटे का कथन है कि अधिकतर दिव्यांगता डिजीज के कारण होता हैं इसका एक अन्य नाम (भ्पदकप ब्ंचचमक) भी है। इसके अतिरिक्त यह भी है कि जीवन में नकारात्मकता तनाव का सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारण है। तनाव होने पर व्यक्ति में नकारात्मकता का प्रवेश हो जाता है। यदि व्यक्ति जीवन में घटित घटनाओं को साहस के साथ सहना सीख ले तो वह एक सुखी जीवन जीने में सक्षम हो सकता है। जिस प्रकार आप शारीरिक

फिटनेस के लिए एक व्यक्तिगत ट्रेनर के बारे में सोचते हैं, वह आपकी नकारात्मक सोच को समझने, पहचानने और दूर करने के तरीके से अवगत करवाता है।

स्वामी विवेकानन्द जी ने कहा है कि –*''आप कभी भी यह मत सोचिए कि कुछ असम्भव है, ऐसा सोचना भी सबसे बड़ा विधर्म है। यदि कोई पाप है तो वह है, यह कहना कि तुम निर्बल हो या अन्य निर्बल हैं।''*[4]

प्रतिदिन कुछ समय (मिनट) तक स्वयं को तनव मुक्त रखने की कोशिश करें, यथा–मेडिटेशन, योगा और गहरी साँस ग्रहण करना आदि क्रियाएँ आपके अनियंत्रित विचारों को एवं भावनाओं को सुधारने में सहयोग प्रदान करती हैं। जिससे विकलांगता होने की सम्भावनाओं पर कुछ हद तक नियंत्रण किया जा सकता है।

साहित्य का मुख्य उद्देश्य यह है कि वह समाज के दबे–कुचले, निःशक्त, निर्धन, मूक एवं उत्पीड़ित जनों की आवाज बने। अक्सर यह देखा गया है कि दिव्यांग जन सामाजिक उपेक्षा के शिकार होते आये हैं कोई उन्हें लंगड़ा, लूला, काना तथा टेढ़ा आदि नामों से पुकारता है ऐसी स्थिति में साहित्यकार एवं सामाजिक सभ्य जनों का कर्तव्य है कि वह इन सबको अपने साहित्य का विषय बनाकर उनकी सामाजिक स्थिति तथा सम्मान दिलाने का प्रयास करें। हमारा भरतीय समाज अनेक उत्कृष्ट विशेषताओं से विभूषित है ऐसी स्थिति में समाज में ही असमानता, भेदभाव आदि की स्थिति उसके लिए माथे पर कलंक जैसा है। भारतीय समाज आर्थिक एवं जातिगत विशेषताओं के कारण ऊँच–नीच तथा जातीय भेद (वर्ण विविधता) आदि तो हैं ही तो क्या शारीरिक एवं मानसिक असक्षमता के आधार पर भी समाज विमक्त होगा?

इस संदर्भ में अनेक साहित्यिक विद्वानों ने दिव्यजनों पर अपनी कलम चलायी है। जैसे हेलेन केलर की आत्मकथा, विष्णु प्रभाकर की कहानी 'नेत्रहीन', सुरभि मेहरा की कहानी 'बिखरे ख्वाब', प्रदीप मिश्र की आँखें', माधुरी मिश्रा की मिलन तथा डॉ. इन्द्रबहादुर सिंह की 'दर्द की दास्तान' आदि।

हिन्दी कविताओं में भी दिव्यांग विमर्श को अनेक कवियों ने अपनी कविताओं का विषय बनाया है। इस संदर्भ में देवेन्द्र सिंह गहरवार की कविता 'खुदी को कर बुलंद इतना' सीताराम अग्रवाल की सेवक की अवधारणा और दिव्यांग चेतना, चरती लाल गोयल की 'भारतीय संस्कृति में दिव्यांगता', द्वारिका प्रसाद अग्रवाल की 'निःशक्तों को संतोष प्रदान करें', पं. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला की 'नये पत्ते', गजानन माधव की 'पथिक', शिवमंगल सिंह सुमन की 'चलना हमारा काम है', तथा हरिवंश राय बच्चन की 'कोशिश करने वालों की हार नहीं होती' आदि में हमें दिव्यांगता के दर्शन होते हैं। कुछ काव्य पंक्तियाँ इस प्रकार हैं–

''लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।
नन्हीं चीटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है।
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना, गिरकर न चढ़ना न अखरता है।
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती।''[5]

कविता एक दर्पण की भाँति होती है, जिसमें समाज के विविध चित्रों, उपलब्धियों, मान्यताओं, जीवन–मूल्यों, अनुभवों तथा विचार दर्शन आदि को प्रकाशित किया जाता है। इसको प्रकाशित करने में कवि की सफलता उसकी संवेदनात्मक विशर्म पर आधारित होती है। 21वीं सदी के कवियों ने अपने काव्य में पर्याप्त महत्व प्रदान किया है इसके साथ–ही–साथ उन्होंने समाज से शोषण, उत्पीड़न एवं दलित वर्ग की विडम्बनाओं को तथा विकलांगता की हेय दृष्टि को भी दूर करने का सफल प्रयास किया है। *''21वीं सदी के अध्ययन–मनन एवं गहन पाठन–पठन से लोगों में जागरुकता की नयी ऊर्जा का संचार हुआ है। जागरुकता के ही इस परिणाम स्वरूप लोग अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए आगे बढ़े हैं तथा अपने लक्ष्य की प्राप्ति की ओर अग्रसर हैं।''*[6]

हिन्दी साहित्य का उपन्यास साहित्य भी विकलांग विमर्श को प्रतिबिम्बित करने में पीछे नहीं है। हिन्दी साहित्य के अनेक विद्वानों ने अपनी अनेक औपन्यासिक कृतियों के माध्यम से दिव्यांग जीवन की सार्थक प्रवृत्ति प्रस्तुत की है। ''इस दिशा में अमृत लाल नागर जी का उपन्यास 'मानस का हंस' सूरदास जी का 'खंजन नयन' तथा

मृदुला सिन्हा जी का 'ज्यों मेंहदी को रंग' आदि उपन्यास निःशक्तता की पीड़ा के जीवन्त दस्तावेज हैं।''[7] इस प्रकार हिन्दी साहित्य में हमें दिव्यांग जीवन के अनेक उदाहरण सर्वत्र दृष्टिगोचर होते हैं। पृथक–पृथक साहित्यकारों ने इस वसुधा धरातल पर मानव को एक 'आदर्श मानव' के रूप में प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है तथा दिव्यांग जनों में सशक्त ऊर्जा का संचार भी किया है।

विद्वत्जनों, साहित्यिक मनीषियों यहाँ तक कि हमारे प्राचीन ऋषि–मुनियों तक ने यह निर्विवाद सिद्ध किया है कि– 'यह निर्विवाद सत्य है कि दिव्यांगता एक अवांछनीय स्थिति है।' दिव्यांगों के लिए प्राचीन काल से ही तिरस्कार, उपहास और सहानुभूतिपरक भाषा ही अपनायी जाती रही है। उन्हें सामान्य जन नहीं स्वीकार किया गया है और न ही उनकी आंतरिक शक्ति को पहचानने की कोशिश की गयी है। दुनिया के और भारतवर्ष के अनेक दिव्य जनों ने अपनी ख्याति के झंडे गाड़े हैं जिनका आज भी दुनिया लोहा मानती है। यह दिव्यांग समाज सदा से ही उपेक्षित जीवन एवं एकाकी जीवन जीने के लिए अभिशप्त रहा है। मनुष्य को ही उपयोगिता के आधार पर व्यर्थ और अस्वीकृत घोषित करना यह सभ्य मनुष्यता का लक्षण नहीं है।

संदर्भ

1. हिन्दी साहित्य में दिव्यांग विमर्श–डॉ. पूजा यादव पृ. 52, संस्करण, 2022, संकल्प प्रकाशन कानपुर।
2. https/Conteet.wisestep.com/Motivational-unspirational Quqtes-disabled.
3. https/www. Bhadas in media.com/Kiklang-Banam Divyang
4. हिन्दी साहित्य में दिव्यांग विमर्श– डॉ. पूजा यादव, पृ. 53, संस्करण 2022, संकल्प प्रकाशन कानपुर
5. कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती– हरिवशं राय बच्चन, पृ. 87 संस्करण 1980 राजपाल एण्ड सन्ज दिल्ली
6. दिव्यांग विभूतियों की जीवन गाथाएँ–विनोद कुमार मिश्र, पृ. 21 संस्करण 2015, भावना प्रकाशन दिल्ली
7. वही, पृ. 160

Cite this Article-

'डॉ. चंद्रकांत बापूराव जोगदंड', "दिव्यागों के प्रति समाज का दायित्व", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:1, Issue:11, November 2024.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

DOI- 10.70650/rvimj.2024v1i4009

Published Date- 11 November 2024